सप्तम अध्याय

उपसंहार

एक साहित्यकार जब अपने अनुभव को लेखन के रूप में प्रस्तुत करता है तब समाज के प्रति उसकी संवेदनशीलता एवं सजगता का परिचय मिलता है । साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में घटित होने वाली घटनाओं एवं वातावरण को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है । एक लेखक ही तत्कालीन समाज में व्याप्त राजनीतिक, धार्मिक, साँस्कृतिक, आर्थिक आदि अनेक परिस्थितियों से अवगत कराता है । तथा समाज की अनेक समस्याओं को प्रस्तुत कर हमें उन

समस्याओं से जूझने के लिए प्रेरित करता है । कहना ग़लत न होगा कि अपने साहित्य के माध्यम से एक संवेदनशील लेखक समाज को उन्नति की ओर ले जान का भरपूर प्रयत्न करता है ।

डॉ० राही मासूम रज़ा एक निर्भीक लेखक के रूप में जाने जाते रहे हैं । उन्होंने जो भी लिखा डंके की चोट पर लिखा । उन्होंने समाज में जो देखा वही यथार्थ रूप में अपने साहित्य में चित्रित किया । राही जी की निर्भय होकर लिखने की प्रवृत्ति ने प्रत्येक क्षेत्र में अपने तेवर दिखाये । जो भी लिखा ईमानदारी के साथ लिखा । उन्हें अपनी बात कहने के लिए कभी किसी बहाने की आवश्यकता नहीं पड़ी । राही जी में संवेदनशीलता, मानवता, अपने देश के प्रति अटूट प्रेम आदि गुणों का समावेश होता है । जो किसी भी सफल साहित्यकार की एक विशिष्ट पहचान है । राही जी के प्रत्येक उपन्यास में अपने देश, अपने गाँव के प्रति प्रेम स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर हुआ है । मातृभूमि से उन्हें अटूट लगाव रहा । डॉ० राही मासूम रज़ा के साहित्य में किसी भी प्रकार का मोह परिलक्षित नहीं होता है । इसीलिए राही जी ने कभी किसी धर्म, जाति अथवा वर्ण की चिंता नहीं की । चाहे कोई भी क्षेत्र रहा हो सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक इन सभी क्षेत्रों में राही जी ने अपना चिंतन व्यक्त किया है ।

राही मासूम रज़ा को अपनी मातृभूमि से अटूट लगाव रहा है । उन्हें यहाँ की मिटटी एवं गंगा से अत्यधिक प्रेम है । उनका यह प्रेम उनके सम्पूर्ण साहित्य में दिखाई देता है । इसीलिए लेखक अलीगढ़ युनिवर्सिटी, जन्मदात्री नफीसा बेगम और गाज़ीपुर की गंगा इन तीनों को अपनी माँ स्वीकार करता है । गाज़ीपुर की गंगा को छोड़कर वह कहीं जाना नहीं चाहता । यद्यपि लेखक मरने के बाद भी स्वयं को इस गंगा के सुपुर्द करने की बात करता है । लेखक के साहित्य में अपना गाँव छोड़ने के बाद भी उसके मस्तिष्क पर उसके गाँव की अमिट छाप दिखाई देती है । साथ ही लेखक आँचलिक यथार्थ को प्रस्तुत करने में भी सक्षम हुआ है । 'आँचलिक' शब्द की विशिष्ट उपन्यास धारा का नामकरण रणु जी के उपन्यास 'मैला आँचल' के बाद हुआ । लेखक ने इस परंपरा का भी यथार्थ रूप में अनुपालन किया है । इस दृष्टि से राही जी अंचल परिवेश के जीवन जीने की पद्धति एवं विषमताओं को अपने उपन्यास साहित्य में रूपायित करने में सफल हुए हैं ।

राही मासूम रज़ा सदैव अनेकता में एकता के ऋणी रहे हैं । उनके उपन्यास साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत हुए हैं जिससे उनके अन्दर व्याप्त साझा संस्कृति की प्रवृत्ति का पता चलता है । मोहर्रम के समय होने वाली अनेक गतिविधियों एवं उदाहरण के माध्यम से लेखक ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं । मोहर्रम के प्रति लेखक का भी अत्यंत लगाव दृष्टिगोचर हुआ है जिसमें लेखक ने सूक्ष्म अति सूक्ष्म पहलुओं को भी बखूबी प्रस्तुत किया है ।

डॉ० राही मासूम रज़ा ने साम्प्रदायिक शक्तियों का डटकर सामना किया है । पाकिस्तान विभाजन के समय जो सम्प्रदाय की भावना उपजी उससे लेखक अत्यंत चिंतित एवं दुःखी दिखाई देता है । साम्प्रदायिकता का विरोध उनके सम्पूर्ण साहित्य में दृष्टिगोचर हुआ है । स्वतंत्रता पूर्व देश में एकता की भावना व्याप्त थी । जहाँ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था । आधा गाँव उपन्यास में गंगौली गाँव हिन्दू-मुस्लिम एकता का परिचायक है । जहाँ हिन्दू-मुसलमान एक समान जीवन व्यतीत करते हैं । एक साथ त्यौहार मनाते हैं । किन्तु पाकिस्तान निर्माण पूरे गाँव में हलचल पैदा कर देता है । गाँव वालो को यह समझ नहीं आता कि पाकिस्तान क्या है ?

स्वतंत्रतापूर्व समाज में हिन्दू-मुस्लिम एकता की भावना दृष्टिगोचर होती है । राही जी ने अपने उपन्यास आधा गाँव में स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात की परिस्थितियों का यथार्थ रूप में वर्णन किया है । राही जी अपने लगभग सभी उपन्यासों में हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रति चिंतित दिखाई दिये हैं । उनका साम्यवादी एवं मानवतावादी दृष्टिकोण उनके उपन्यासों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है । राही जी ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से ऊँच-नीच एवं जातिगत भावना के प्रति विरोध व्यक्त किया है । जातिवाद की भावना समाज को तोड़ने का काम करती है । रूढ़िवादी परम्पराएं समाज की प्रगति का रोड़ा बनती हैं । लेखक का मानना है कि एक मात्र भारतीय संस्कृति ही अनेकता में एकता को स्थापित करती है । शोध के दौरान राही जी के उपन्यासों के माध्यम से ज्ञात हुआ कि वे सम्पूर्ण समाज तथा देश को एकसूत्र में बाँधने के पक्ष में रहे ।

इस्लाम धर्म जातिगत भावनाओं को मान्यता नहीं देता किन्तु आन्तरिक रूप से शीआ-सुन्नी के आपसी भेदभाव आज भी इस समाज में व्याप्त हैं । लेखक ने अपने उपन्यास आधा गाँव में इसका यथार्थ रूप में चित्रण किया है । मोहर्रम के दौरान इस प्रकार की भावना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है । 'आधा गाँव' उपन्यास में मोहर्रम के समय होने वाले शीआ-सुन्नी के झगड़ों का खुलकर चित्रण हुआ है । इसके अतिरिक्त सैयद ज़मींदारों को अपनी शुद्ध हडडी पर बड़ा घमंड है । यह लोग अपने से नीची जाति के साथ कोई सम्बन्ध रखना अपनी शान के खिलाफ़ समझते थे । किन्तु पाकिस्तान निर्माण इन लोगों के घमंड को चकनाचूर कर देता है । परिवर्तन सृष्टि का नियम है । समय बदला । लोगों के विचार बदले । लेखक ने परूसराम जैसे छोटी जाति वाले का नेता बनना तथा उसका ज़मींदारों के साथ उठना-बैठना आदि के माध्यम से समाज की प्रगति एवं रूढ़िवादी विचारों के अन्त की ओर इंगित किया है । उसी प्रकार आधा गाँव की पात्रा सईदा शिक्षा प्राप्त करती है । तत्पश्चात नौकरी भी करती है । समाज के लोग उसकी शिक्षा एवं नौकरी करने पर आपत्ति जताते हैं किन्तु वह चिंतित नहीं होती । इस प्रसंग से लेखक ने नारी शिक्षा की ओर ध्यानाकर्षित किया है । एक प्रगतिशील समाज के लिए रूढ़िवादी विचारधारा तथा परम्पराओं का अन्त होना अत्यंत आवश्यक है ।

पाकिस्तान निर्माण ने परिवारों को बिखेर कर रख दिया । लोगों में साम्प्रदायिकता की भावना उत्पन्न हुई जिससे सामाजिक वातावरण तहस-नहस हो गया । लेखक का मानना है कि "हर साम्प्रदायिक दंगा देश को कमज़ोर करता है कट्टरवादी देशद्रोही हैं । वह गीता सुनाएं, चाहे कुरान और चाहे गुरुग्रन्थ साहब । कट्टरवादियों के साथ वही सुलूक करना चाहिए जो देशद्रोहियों के साथ किया जाता ह फांसी ।"0। लेखक इन सारी परिस्थितियों से अत्यंत दुखी है तथा उसने इन घटनाओं को यथार्थ रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर उनसे लड़ने को प्रेरित किया है । इसके अतिरिक्त लेखक ने यह भी स्पष्ट रूप से अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है कि इन घटनाओं के पीछे राजनीतिक षडयंत्र थे । 'आधा गाँव' उपन्यास के माध्यम से मुस्लिम लीग के कारनामों का पता चलता है । जिसके तहत समाज में हिन्दू-मुस्लिम एकता खण्डित होती नज़र आयी । पाकिस्तान से आये मुस्लिम लीगी ने आम जनता

को भड़काया । हिन्दू-मुसलमानों को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा किया । इसके पीछे राजनीतिक चाल थी । और वह अपनी इस चाल में सफल भी हुए ।

लेखक ने अपने उपन्यास साहित्य में राजनीति का यथार्थ रूप में चित्रण किया है जिससे उसकी राजनीति के प्रति चिंता व्यक्त हुई है । राही जी के उपन्यासों में राजनीति के प्रति करारा व्यंग्य प्रस्तुत हुआ है । स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक क्षेत्र में अवसरवादी नेताओं की खपत अधिक होती दिखाई दी । राजनीतिक दलों ने अपने स्वार्थ हेतु भोली-भाली जनता का शोषण किया । तत्कालीन समाज की राजनीतिक स्थिति से लेखक अत्यंत चिंतित दिखाई दिया है । कटरा बी आर्ज़ू, टोपी शुक्ला, असंतोष के दिन, नीम का पेड़, आदि उपन्यासों में राजनीति का नंगा नाच अभिव्यक्त हुआ है । इंदिरा गाँधी की इमरजेंसी से किसका लाभ हुआ ? साधारण जनता इसका शिकार हुई । लोगो को इंदिरा गाँधी पर भरोसा था । किन्तु उस भरोसे को इंदिरा गाँधी ने एक झटके में तोड़ दिया । लेखक राजनीति और धर्म दोनों को अलग मानता है । किन्तु धर्म के ठेकेदारों ने धर्म को राजनीति के रंग में रंग दिया है । पाखण्डी लोग धर्म की आड़ में राजनीतिक षडयंत्र रचते हैं । धर्म को आड़े रखकर ही राजनीतिक चालें चली गयीं और हिन्दू-मुस्लिम दंगे करवाये गये । लोगों में साम्प्रदायिकता की भावना पैदा करने वाले यही पाखण्डी लोग थे । जिन्होनें हिन्दू-मुस्लिम एकता को खण्डित कर दिया । जिसके परिणामस्वरूप देश का बँटवारा हुआ । लेखक इस प्रकार की घटनाओं का अत्यंत निर्भीकता से साथ चित्रण करने में सफल हुआ है ।

राही के उपन्यास साहित्य में राजनीतिक स्वार्थ का खुले रूप में चित्रण मिलता है । जहाँ लेखक असंतोषपूर्ण राजनीति के प्रति अत्यंत दुखी दिखाई देता है । स्वार्थपरक राजनीति ने पूरे समाज को गंदा कर रखा है । आज की राजनीति पूर्ण रूप से स्वार्थी हो चुकी है । यहाँ नेता लोग केवल अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं । प्रत्येक क्षेत्र स्वार्थपरक राजनीति से प्रभावित है । राजनीति के बल पर ही टोपी को योग्य होते हुए भी स्कालरशिप न मिलकर किसी मुसलमान लड़के को मिल जाती है । 'कटरा बी आर्ज़ू' उपन्यास के अन्तर्गत लेखक ने सरकार के अत्याचारों एवं राजनीतिक स्वार्थ को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है । इस गंदी राजनीति के बल पर ही पुलिस वाले अपने उच्च पद हेतु देशराज को टार्चर करते हैं, उसको अनेक यात्नाएं

देते हैं । सरकार को खुश करके उनको उच्च पद प्राप्त करना था । जिसके लिए वह किसी भी हद तक जाते हैं । जगदम्बा प्रसाद के माध्यम से राही जी ने पुलिस शासन के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई है । लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे देश की राजनीति को अपने स्वार्थ को त्यागना होगा । एक स्वार्थी नेता देश को सुचारु रूप से चलाने में कभी सक्षम नहीं हो सकता । हमारे देश की बागडोर इन नेताओं के हाथ में है यदि यह नेता ही बहक गये तो हमारे देश का क्या होगा ?

लेखक के उपन्यास साहित्य में ज़मींदारी प्रथा का भी यथार्थ रूप में उल्लेख मिलता है । जिससे ज्ञात होता है कि राजनीति का सहारा लेकर ज़मींदारों ने आम जनता पर कितने अत्याचार किये । बरसों से यह ज़मींदार लोग आम जनता का शोषण करते चले आ रहे थे । ग्रामीण जीवन उनके अत्याचारों से निजात पाने में लगभग असफल था । इन ज़मींदारों ने मज़दूरों से आजीवन बेगारी करवायी । किन्तु समय का चक्र घूमा और ज़मींदारी प्रथा की समाप्ति हुई । जिससे जनसाधारण ने कुछ राहत की साँस ली । परन्तु ज़मींदारी के समाप्त होने पर भी कुछ ज़मींदार लोग आम जनता का शोषण करते रहे । यह ज़मींदार लोग गाँव में रहते हुए राजनीति के बल पर अनेक प्रयासों के फलस्वरूप गरीबों पर अत्याचार करते रहे हैं ।

आर्थिक दृष्टि से लेखक के उपन्यासों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज अनेक रूप से निर्धनता का सामना कर रहा था । लेखक का ध्यान मध्यम वर्ग की ओर अधिक आकृष्ट होता दिखाई दिया है । जहाँ इस वर्ग का समस्त जीवन अर्थ संग्रहित करने में ही व्यतीत हो जाता है । अनेक मान्यताओं एवं परम्पराओं का अनुसरण करने के साथ-साथ यह वर्ग आर्थिक तंगी का भी सामना करता है । एक ओर मूल्य वृद्धि तथा दूसरी ओर अर्थ की कमी इस वर्ग के लिए एक विडम्बना रही है ।

'कटरा बी आर्ज़ू' उपन्यास में मध्यम वर्ग की कारुणिक स्थिति का खुलकर चित्रण हुआ है । जहाँ मध्यम वर्ग के अरमानों का बिखरना है, उनके सपनों का टूटना है । देशराज और बिल्लो एक-एक पैसा जोड़कर घर बनाते हैं । और वह घर मास्टर प्लान के अन्तर्गत बुल्डोज़र से गिरा दिया जाता है । इसके अतिरिक्त शम्सू मियाँ के पारिवारिक वातावरण से उनकी आर्थिक स्थिति का पता चलता है । खाना न होने के कारण शम्सू मियाँ रोज़े का बहाना

करते हैं । यह अत्यंत मार्मिक प्रसंग है । लेखक की यहाँ मध्यम वर्ग के प्रति दयनीय भावना अभिव्यक्त हुई है । इसके अतिरिक्त निम्न वर्ग के संघर्ष को भी लेखक ने अपने उपन्यासों में दर्शाया है ।

सीन :75, कटरा बी आर्जू, हिम्मत जौनपुरी आदि उपन्यासों के माध्यम से लेखक ने मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति एवं दरिद्रता पर प्रकाश डाला है । मध्यम वर्गीय समाज आजीवन आर्थिक समस्याओं से जूझता रहता है । राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र मिलते हैं जो बेरोज़गार हैं, दरिद्र हैं । शिक्षित वर्ग भी बेरोज़गारी का सामना कर रहा है । रफ्फ़न के पात्र से पता चलता है कि आज का युवक अपना फन मारकर अपना घर-परिवार चलाने के लिए कुछ भी करता है । वह एक अच्छा लेखक है किन्तु आर्थिक विषमता उसे एक घटिया उपन्यास लिखने पर मजबूर करती है । उसी प्रकार भोलेनाथ खटक जी जो क्लर्क है, शम्सू मियाँ, हिम्मत जौनपुरी आदि ऐसे पात्र हैं जिनकी दशा पर लेखक सोचने को मजबूर करता है ।

'सीन : 75' के पात्र वी० डी० के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयत्न किया है कि जब एक शिक्षित नवयुवक को उसकी योग्यतानुसार काम नहीं मिलता तो वह गलत रास्ते पर चल पड़ता है । इसीलिए वी० डी० भिखारियों का रैकेट चलाने का काम करता है । किन्तु अन्त में वी० डी० गुंडों के हाथों मारा जाता है । जिससे लेखक इस बात की ओर भी संकेत करता है कि बुरे काम का अंजाम बुरा ही होता है । लेखक का स्पष्ट मत है कि हमार देश में आर्थिक योजनाओं कमी नहीं है किन्तु उसको सही ढंग से चलाया नहीं जाता । हमारे देश की आर्थिक योजनाएं आदि पूर्ण रूप से राजनीति पर निर्भर होती हैं । यदि यह योजनाएं सही रूप से चलायी जाएं तो देश में न बेरोज़गारी होगी, न भिखारी होंगे और न ही दरिद्रता ।

इसके अतिरिक्त राही जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से फिल्मी वातावरण का भी यथार्थ रूप में चित्रण किया है । सीन : 75 तथा दिल एक सादा काग़ज़ उपन्यास में फिल्मी दुनिया का खुले रूप में चित्रण मिलता है । राही जी इस वातावरण को काफी नज़दीक से जिये हैं । इसलिए उन्होंने अपने उपन्यासों में फिल्मी दुनिया की आंतरिकता को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है । राही जी का मानना था कि फिल्म एक ऐसा माध्यम है जिससे शिक्षित

एवं अशिक्षित दोनों ही समाज प्रभावित होते हैं । "राही का साहित्य हमें बताता है कि सिनेमा, दूरदर्शन और साहित्य लोगों को जोड़ने तथा भारतीयता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।"02 इससे पता चलता है कि राही जी की दृष्टि में सिनेमा सामाजिक संदेश देने में सक्षम है । अतः यह स्पष्ट होता है कि वह फिल्म को साहित्य का ही एक रूप मानते थे ।

लेखक की नारी के प्रति उदारता की भावना दृष्टिगोचर हुई है । जहाँ लेखक ने नारी की अनेक समस्याओं को दर्शाते हुए उसे समस्याओं से मुक्त करने का भी सफल प्रयत्न किया है । राही जी के उपन्यास साहित्य से पता चला कि नारी अनेक समस्याओं से जूझती रही है । तथा इनका निवारण अत्यंत आवश्यक है । लेखक ने आधा गाँव की पात्र उम्मुल हबीबा के द्वारा विधवा की कारुणिक स्थिति का चित्रण किया है । जो समाज की एक बड़ी समस्या है । जहाँ एक विधवा स्त्री को समाज से लगभग बहिष्कृत कर दिया जाता है । और उसके साथ अछूत जैसा व्यवहार किया जाता है । लेखक नारी की इस स्थिति से अत्यंत चिंतित है ।

वश्या वृत्ति की समस्या की ओर भी लेखक का ध्यान आकृष्ट हुआ है । जहाँ लेखक ने यह भी बताने का प्रयास किया है कि वैश्या वृत्ति उनकी आर्थिक विषमता है । जिसके कारण वे इस प्रकार के घिनौने कार्य करने के लिए विवश हैं । टामी बाई, जमुना, गुलाबी जान, इमामबाँदी आदि चरित्रों के माध्यम से लेखक ने वैश्याओं की कारुणिक स्थिति का चित्रण किया है । हिम्मत जौनपुरी की जमुना के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करता है कि वह पेट भरने का कोई उपाय न होने पर यह कार्य करने को विवश है । "देख हिम्मत, तू धन्धे में टाँग मत अड़ायाकर । तू बिल्लो से काहे नहीं बोलता कि फूल बचना छोड़ दे । तू गफ्फार चाचा से काहे नहीं बोलता कि ऊ चाय बेचना छोड़ दे । बिल्लो के पास फूल है । गफ्फार के पास चाय है । अपन के पास बदन है जेके पास जो होवेगा ऊ वही चीज तो बेचेगा ।"03 कोई भी स्त्री जन्मजात वैश्या नहीं होती । उसे वैश्या बनाता है यह समाज । इनकी वैश्या वत्ति के पीछे कहीं आर्थिक विषमता है तो कहीं परम्परागत रूप से चली आ रही कुप्रथाओं का अनुसरण ।

'आधा गाँव' उपन्यास के अन्तर्गत नथ उतारने की प्रथा का चित्रण हुआ है । "भाई मरहूम ने उसकी बड़ी बहन का नथ उतारा था, बाबा मरहूम ने उसकी खाला का नथ उतारा था, इसलिए गलाबी जान का नथ मैं उतारूँगा ।"04 गुलाबी जान की वैश्या वृत्ति के पीछे उसकी प्रथा थी । लेखक के उपन्यासों में इस प्रकार की कुप्रथाओं, अंधविश्वासों का वास्तविक रूप में वर्णन मिलता है । समाज इन लोगों को हीन दृष्टि से देखता है । तथा उनके साथ अनुचित व्यवहार करता है । उसका निरादर करता है । उसकी इस दशा का ज़िम्मेदार कौन है ? यह समाज इन औरतों के इस कार्य की मजबूरी नहीं देखता । लेखक ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इन औरतों की वैश्या वृत्ति की मजबूरी पर प्रकाश डाला है ।

लेखक ने अपने उपन्यास साहित्य में बछनिया के माध्यम से अवैध मातृत्व की समस्या का भी चित्रण किया है । जो सफिरवा के बच्चे की बिन-ब्याही माँ बनने वाली होती है । जिसके कारण वह सफिरवा के साथ भाग जाती है । इस घटना के बाद बछनिया के माँ-बाप कुएँ में कूदकर अपनी जान दे देते हैं । क्या इस घटना की ज़िम्मेदार केवल बछनिया है ? या उसके माँ-बाप हैं ? क्यों इस प्रकार की समस्या का सामना केवल स्त्री करती है ? यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान अत्यंत आवश्यक है । तथा पुरुष समाज को इस प्रकार की समस्या पर विचार करना चाहिए । लेखक इस प्रकार की समस्याओं को अपने उपन्यासों में उद्घाटित कर इनके समाधान के लिए प्रेरित करता है । राही जी के उपन्यास साहित्य में उनकी नारी के प्रति सहानुभूति प्रकट हुई है । जिससे लेखक की संवेदनशीलता का पता चलता है ।

'टोपी शुक्ला' उपन्यास का बलभद्रनारायण उर्फ टोपी शुक्ला के माध्यम से पता चलता है कि बचपन में घटित घटनाओं का प्रभाव अमिट होता है । जो आगे चलकर मानसिक रूप से उसके व्यक्तित्व को अत्यंत प्रभावित करता है जिसके कारण उसका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता । जो स्वयं को कमतर ही समझता रहा । टोपी शुक्ला के माध्यम से लेखक ने मनोवैज्ञानिक स्थिति का यथार्थ रूप में चित्रण किया है । टोपी शुक्ला को अपने परिवार से उपेक्षित किये जाने के कारण वह घर से भाग जाता है । अतः इस घटना के बाद उसे प्रत्येक क्षेत्र में उपेक्षा ही मिली । न उसको परिवार मिला, न दोस्त, न प्यार और न नौकरी । जिसके

कारण वह मानसिक रूप से कुंठित हो जाता है । वह हालात से समझौता नहीं कर पाता और अंत म आत्महत्या कर लेता है । लेखक ने आत्महत्या को सभ्यता की हार माना है । क्योंकि टोपी ने तत्कालीन परिस्थितियों से समझौता नहीं किया और हार मान ली । लेखक इस घटना से यह भी स्पष्ट करना चाहता है कि आज का युवक समाज से झुंझलाया हुआ है । क्योंकि वह शिक्षित होने के उपरांत भी समाज में उसे योग्य स्थान प्राप्त नहीं है । वह अपने जीवन से निराश है । बेरोज़गारी की घुटन उसे आन्तरिक रूप से इतना क्षीण कर देती है कि आत्महत्या के अतिरिक्त उसे कुछ सूझता ही नहीं । यहाँ लेखक की युवा वर्ग के प्रति चिंता अभिव्यक्त होती है ।

लेखक का अपने गाव के प्रति अत्यंत लगाव स्पष्ट हुआ है । ग्रामीण समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के अनेक सुन्दर चित्र प्रस्तुत करने में लेखक सफल हुआ है । जहाँ लेखक ने गाँव के रीति-रिवाज, खान-पान, वेशभूषा आदि का चित्रण किया है । गाँव के तीर-त्यौहारों का भी कथाकार ने भरपूर मज़ा लिया है । ईद, मोहर्रम, होली, रक्षाबंधन आदि का राही के उपन्यास साहित्य में वर्णन मिलता है । शादी-ब्याह आदि प्रसंगों को भी लेखक ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है । कथाकार आँचलिक परिवेश में रहा है जिससे वह लोक-संस्कृति के अदभुत चित्र उपस्थित करने में सफल हुआ है । अंचल परिवेश के गीत ग्रामीण संस्कृति की पहचान है । लेखक ने इन गीतों का प्रयोग कर ग्रामीण संस्कृति की सुन्दरता को बनाये रखा है । प्रकृति के प्रति भी लेखक का काफी रुझान दिखाई दिया है । गाँव के नदी-नालो, हरियाली आदि प्राकृतिक सुष्मा का भी राही के उपन्यास साहित्य चित्रण मिलता है । इसके अतिरिक्त गाँव के लोगों में परम्परानुसार चले आ रहे इनके अंधविश्वासों का भी खुलकर चित्रण मिलता है । जिससे लेखक के गहन अध्ययन का पता चलता है ।

आलोच्य सम्पूर्ण साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात ज्ञात होता है कि लेखक ने भाषा के प्रति बड़ी ही सजगता एवं सतर्कता दिखाई है । लेखक का अनेक भाषाओं पर अधिकार भी दृष्टिगोचर हुआ है । राही जी ने अपने उपन्यास साहित्य में भाषा के सृजनात्मक प्रयोग किये हैं । समस्याओं के विश्लेषण के माध्यम से लेखक ने अंचल परिवेश की भाषा का बखूबी प्रयोग किया है । लेखक पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग कर अपने साहित्य

को जीवंत रूप देने में सफल हुआ है । जहाँ लेखक ने लोकगीत, कहावतें, मुहावरे, भाषा शैली के विविध रूपों आदि का सफल प्रयोग किया है । आँचलिक वार्तालाप हेतु भोजपुरी भाषा का प्रयोग मिलता है । लेखक ने अपने उपन्यास साहित्य में उर्दू, भोजपुरी, अवधि, छत्तीसगढ़ी आदि भाषाओं का प्रयोग किया है । शब्द प्रयोग में कहीं-कहीं लेखक ने अंग्रेज़ी एवं फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है । लेखक के अभिव्यक्ति पक्ष से उसकी सृजनशीलता का पता चलता है ।

डा० राही मासूम रज़ा का हिन्दी साहित्य जगत में विशेष योगदान रहा है । उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कविताओं के माध्यम से समाज के ऐसे-ऐसे मुद्दों को उठाया जिससे समाज गर्त की ओर जा रहा था । फिर चाहें वह राजनीतिक क्षेत्र हो या धार्मिक क्षेत्र । राजनीतिक क्षेत्र में राही जी बड़े से बड़े नेता को भी अपनी बात कहने से नहीं चूके । साम्प्रदायिकता और राजनीति को एक साथ जोड़ने वाले लोगों की लेखक ने कड़ी आलोचना की है । फिर चाहें वह एडवाणी हो या राजीव गाँधी अथवा तो बाल ठाकरे । हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही धर्मों के लिए राही जी बोले और बेधड़क बोले । उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से कटटरपंथियों का मुँह बंद कर दिया । शोध के दौरान ज्ञात हुआ कि लेखक ने अपने साहित्य में समाज की अनेक जटिल समस्याओं को उभारा है और उनसे लड़ने के लिए प्रेरित भी किया है ।

इस प्रकार लेखक के साहित्य से उनके आदर्शवादी चरित्र एवं महान व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं । लेखक भविष्य के प्रति अत्यधिक निष्ठावान दिखाई देते हैं । राही जी के उपन्यास साहित्य से आने वाली पीढ़ी के लिए चिंता परिलक्षित होती है । लेखक का साहित्य स्वयं में एक विशिष्ट पहचान है । उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नवयुवकों में राष्ट्र के प्रति उजागर करने का प्रयत्न किया है । देश का सर्वांगीण विकास हेतु लेखक भारतीय संस्कृति को सर्वोपरि मानता है । क्योंकि भारतीय संस्कृति कभी धार्मिक कटटरता की बात नहीं करती । साथ ही लेखक के साहित्य से ज्ञात हुआ कि वह मानवता को सबसे अधिक महत्व देते हैं । उनका मानना है कि सभी धर्मों का आधार मानवता है । निःसंदेह लेखक दया, ममता, करुणा, सहनशीलता, धैर्य, संयम एवं सहिष्णुता आदि गुणों से परिपूर्ण है जो लेखक की विशिष्ट पहचान है । अंततः राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज एवं देश

को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने के लिए जो चिंतन व्यक्त किया है, वह अविस्मरणीय है । अतः राही का समूचा साहित्य हिन्दी साहित्य जगत के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है । जो समाज के अनेक पहलुओं को समझने में काफी सहायक सिद्ध होता है । राही जी का साहित्य भारतीय संस्कृति की पहचान है । जो अपने देश के प्रति अटूट लगाव एवं 'सर्व धर्म समभाव' का संदेश देता है ।

अस्तु

संदर्भिका

1. लगता है बेकार गये हम, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 102
2. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 278
3. राही मासूम रज़ा : एक अध्ययन, डॉ० जिलेदार सिंह पृ० 68
4. आधा गाँव, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 88

******